ISSN : 0975-3664 UGC Care Listed RNI : U.P.BIL/2012/43696

Year : 2025 Month : January-March Special Volume

शोध धारा
SHODH DHARA

A Peer Reviewed Research Journal of Humanities & Social Science
A Reviewed & International Indexed Journal

विशेषांक

ग्रामीण पर्यटन : विकास, रोजगार एवं सम्भावनाएं

शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई-जालौन (उ.प्र.) द्वारा प्रकाशित

Published by Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan
Orai (Jalaun) U.P.

45.	भारत में ग्रामीण पर्यट... फिनटेक की भूमिका का अध्ययन	वीरेंद्र कुमार	
46.	'ग्रामीण पर्यटन तथा सतत आर्थिक विकास : 'उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में'	डॉ. कमलेश कुमार	230–234
47.	बुन्देलखण्ड क्षेत्र (उत्तर प्रदेश) में पर्यटन की संभावनायें	डॉ. रामदरश सिंह यादव	235–238
48.	बुन्देलखण्ड क्षेत्र में ग्रामीण पर्यटन : क्षमताएँ एवं संभावनाएँ (एक समाजशास्त्रीय अवलोकन)	डॉ. विश्वनाथ चंद्रकांत पटेकर	239–242
49.	ग्रामीण पर्यटन और युवाओं को आजीविका के अवसर	डॉ. आलोक कुमार पाण्डेय	243–246
50.	बुंदेलखंड की लोक संस्कृति : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं सांस्कृतिक विशिष्टता	गजेन्द्र सिंह 'मधुसूदन'	247–254
51.	आत्मनिर्भर भारत के सपने के रुप में ग्रामीण पर्यटन की राष्ट्रीय रणनीति का मूल्यांकन	डॉ. अमित कुमार सिंह डॉ. स्वाति पाठक	255–258
52.	ग्रामीण पर्यटन : विकास एवं संभावनाएं	रत्नेश कुमारी	259–26
53.	ग्रामीण पर्यटन एवं कृषि उत्पाद प्रसंस्करण तथा विक्रय	जगदीप कुमार दिवाकर	264–26
54.	ग्रामीण पर्यटन, प्रकृति और पारिस्थितिकी	शशि शेखर	267–26
55.	बुन्देलखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित पर्यटन स्थल	डॉ. इंग्लेश कुमार भारती	270–27
56.	भारतीय पर्यटन उद्योग की आर्थिकी	नीलम चौधरी	273–27
57.	ग्रामीण पर्यटन और वित्तीय समावेशनः महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक कदम	मयंक राज	277–28
58.	उत्तर प्रदेश में ग्रामीण पर्यटन विकास के लिए विपणन रणनीतियाँ	डॉ. दिग्विजय सिंह डॉ. बलकार पूनिया	282–28
59.	बुंदेलखंड के नरसिंहपुर जिले के ग्रामीण पर्यटन स्थल	डॉ. प्रतिभा सिंह	288–29
60.	ग्रामीण पर्यटन और युवाओं के लिए आजीविका के अवसर		

ISSN : 0975-3664, RNI : U.P. BIL/2012/43696
SHODH-DHARA; Jan.-March. 2025, P. 264-266

ग्रामीण पर्यटन, प्रकृति और पारिस्थितिकी

जगदीप कुमार दिवाकर
असि0 प्रो0 समाजशास्त्र विभाग,
डी0बी0एस0, कालेज गोविन्द नगर, कानपुर, (उ.प्र.)

सारांश–भारत में कुल आबादी का लगभग 69 प्रतिशत लोग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते है। गांधी जी कहते थे कि भारत का विकास करना है तो ग्रामों का विकास करना होगा, भारत अपने आप विकसित हो जायेगा। ग्रामीण पर्यटन, भारत को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का एक जरिया सिद्ध हो सकता है। साथ ही साथ भारत की लोक कला, संस्कृति एवं ज्ञान परम्परा का वैश्विक प्रसार में सहायक की भूमिका भी निभा सकता है। भारत के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल व धरोहर शहरी क्षेत्रों में अवस्थित है किन्तु ग्रामीण क्षेत्र स्वच्छ वायु, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी का एक सुन्दर संगम है। ग्रामीण पर्यटन द्वारा मानव को प्रकृति के सानिध्य में रहने का अनुभव तथा सरकार व समाज को प्रकृति व पारिस्थितिकी के संरक्षण में प्रेरणा के स्रोत की भूमिका निभा सकता है। उत्तर भारत, दक्षिण और पूर्वोत्तर भारत के सुदूर ग्रामीण परिवेश आकर्षण का केन्द्र है।

Figure : 00 **References : 08** **Table : 00**
मुख्य शब्द–परिस्थितिकी, ग्रामीण, परिवेश, संस्कृति, ज्ञान परम्परा, पर्यटन

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन की संभावनाओं को समझना।
2. लोक संस्कृति एवं लोक परम्परा को समझना।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण एवं परिस्थितिकी का अध्ययन।

शोध प्रविधि–सम्बन्धित शोध विषय की आवश्यकतानुरूप प्रस्तुत शोध कार्य में विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं एवं सरकारी योजनाओ आदि को माध्यम बनाकर ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन, पर्यावरण परिस्थितिकी का अध्ययन किया जायेगा।

"सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ,
जिंदगानी गर कुछ रही तो ये जवानी फिर कहा।"

ख्वाजा मीर दर्द की ये पंक्तियाँ पर्यटन के महत्व को बखूबी व्यक्त करती है। पर्यटन अर्थात घूमना–फिरना मनुष्य का सबसे सुन्दर सपना होता है। कुछ लोग प्रायः पर्यटन करते रहते हैं तो कुछ लोग कभी कभी पर्यटन करते है। भारत में वर्ष 2022 में घरेलू पर्यटकों की संख्या 1731.01 मिलियन थी जो वर्ष 2023 में बढ़कर 2509.63 मिलियन हो गयी है। यह बढ़ती हुई संख्या यह इंगित करती है कि भारत पर्यटन का एक बड़ा बाजार है। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2021 में भारत में 10 लाख 54 हजार, वर्ष 2022 में 85 लाख 87 हजार, वर्ष 2023 में 1 करोड़ 92 लाख विदेशी, पर्यटक आये। वर्ल्ड टूरिज्म ऑर्गेनाइजेशन के अनुसार फ्रांस में सबसे अधिक विदेशी पर्यटक घूमने आये। फ्रांस में समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, प्राचीन ऐतिहासिक स्थल एवं खाने–पीने की विविधता आदि तथ्य मिलकर पर्यटन को आकर्षित करते है। विश्व आर्थिक मंच के यात्रा और पर्यटन विकास सूचकांक 2024 के अनुसार भारत 119 देशो की सूची में 39वें स्थान पर है जबकि वर्ष 2021 में भारत 54वें स्थान पर था। इससे स्पष्ट होता है कि भारत में देशी–विदेशी पर्यटन में लगातार वृद्धि हो रही है।

यूरोप के प्रायः सभी देश पर्यटन के लिये आकर्षण है। यूरोप ने पर्यटन को बढ़ावा देने में वहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत विशेष भूमिका अदा करती है। सांस्कृतिक विरासत में ग्रामीण परिवेश का विशेष महत्व है। भारत में ग्रामीण पर्यटन पर विशेष ध्यान नही दिया गया इसीलिय यह अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है। वर्तमान में ग्रामीण विकास व पर्यटन सरकार की प्राथमिकता में शामिल थे। ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत विकास, पर्यटन को प्रोत्साहन देता है। भारत सरकार ने वित्त वर्ष 2024–25 के बजट मे ग्रामीण विकास के लिये 2.66 लाख करोड़ रू0 के बजट का प्रावधान किया गया है। इस बजट में पीएम ग्रामीण आवास योजा के तहत गरीबों के लिये घर, ग्रामीण क्षेत्रों में सड़के, जल जीवन मिशन के तहत हर घर को स्वच्छ जल तथा मनरेगा का आवंटन बढ़ाकर 86000 करोड़ रू0 किया गया।

पर्यटन के प्रकार

1. घरेलू पर्यटन – किसी देश के भीतर एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में भ्रमण के लिये जाना घरेलू पर्यटन का एक बड़ा श्रोत है।

2. ग्रामीण पर्यटन : शहरी जीवन की भाग–दौड़ से मुक्त होकर प्रकृति व संस्कृति के सानिध्य में रहकर कुछ समय व्यतीत करना ग्रामीण पर्यटन कहलाता है। ग्रामीण पर्यटन किसी भी अन्य पर्यटन की तुलना में अत्यन्त सरल व सस्ता है। भारत गांवों का देश है। अतः भारत में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनायें है।

3. विदेशी पर्यटन – विदेशी पर्यटन में अपने देश की सीमाओं से बाहर जाकर यात्रा करना आता है। विदेशी पर्यटन में विदेशी भारत यात्रा पर आते है और भारतीय विदेश यात्रा पर जाते है।

4. खेल पर्यटन –जैसेकि राफ्टिंग, स्कीइंग, स्नोबोर्डिंग, सर्फिंग, ड्राइविंग, साइकिलिंग आदि आते हैं।

5. सांस्कृतिक पर्यटन – वास्तु शिल्प, स्मारक, तीज–त्यौहार, रंगमंच, संगीत का समृद्ध इतिहास सांस्कृतिक पर्यटन का केन्द्र है।

6. धार्मिक पर्यटन –विभिन्न धार्मिक स्थल जैसे वैष्णों देवी, केदारनाथ जंगन्नाथ, मथुरा, काशी आदि धार्मिक यात्रा के साथ–साथ पर्यटन का भी अवसर उपलब्ध कराते है।

भारत में ग्रामीण पर्यटन–मेघालय राज्य का मावल्लीनॉग नामक ग्राम को एशिया का सबसे स्वच्छ व सुन्दर गॉव का दर्जा प्राप्त है। कन्याकुमारी का मथुर ग्राम, सिक्किम का लांचुग, हिमांचल प्रदेश का मलाना, उत्तराखण्ड का कसौनी ग्राम आदि अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के साथ–साथ अपनी विशेष स्थानीय संस्कृति के लिये भी आकर्षण का केन्द्र है। भारत के समग्र विकास के लिये ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों का विकास शहरी क्षेत्रों की तर्ज पर करना, भविष्य के लिये हानिकारक हो सकता है। उदाहरण स्वरूप उत्तराखण्ड का उत्तरकाशी क्षेत्र वर्ष 2023 में भूमि धसाव, घरों में दरार आदि का साक्षी बना। उत्तरकाशी की त्राशदी का प्रमुख कारण अत्यधिक मानव निर्माण व पहाड़ों में ड्रिलिंग आदि को बताया गया। भारत में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये निम्नलिखित क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता है–

ग्रामीण आत्मनिर्भरता–गांधी जी आत्म निर्भर गाँवों की अवधारणा के पक्के समर्थक थे। ग्रामीण समस्याओं का समाधान आत्मनिर्भर गांवों में छिपा है। गांवों को आत्मनिर्भर बनाने में स्वयं सहायता समूहों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सूक्ष्म व लघु उद्योगों की 51 फीसदी इकाइयाँ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित है। हमारे देश में मौजूद 2.5 लाख से अधिक ग्राम पंचायतें स्वशासन के लिये उत्तरदायी है। ग्राम पंचायतों का आवंटन बढ़ाने की तथा सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है "इस दिशा में पंचायतीराज मंत्रालय ने एक रोडमैप तैयार किया है। जो 17 एलएसडीसी को नौ विकास क्षेत्रों में एकीकृत करता है। ताकि लक्षित साक्ष्य आधारित पंचायत विकास योजनाओं के माध्यम से गॉवों में सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता है।"[1]

कृषि एवं पशुपालन–भारत आज भी एक कृषि प्रधान देश है। हमारी कुल जनसंख्या का लगभग 50 प्रतिशत रोजगार के लिये कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है। भारतीय कृषि, कम उपज व उच्च लागत का

शिकार है जिस कारण लोगों का कृषि से मोहभंग हो रहा है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था व लोगों को उच्च आर्थिक विकास की ओर ले जाने के लिये आवश्यक है कि कृषि व पशुपालन को टेक्नोलॉजी से जोड़ा जाये। ग्रामीण अर्थव्यवस्था व ग्रामीणजनों के आय व जीवन स्तर में स्थिरता के लिये आवश्यक है कि कृषि, पशुपालन को पर्यावरण व पर्यटन से जोड़ दिया जाये। केरल के मसाले व काफी बागान, असम के चाय बागान, पूर्वोत्तर के धान के खेत पर्यटन के लिये आकर्षण का केन्द्र है व आय का एक स्रोत भी।[2]

गॉव, पर्यावरण एवं परिस्थितिकी–ऐसा माना जाता है कि धरती पर जीवन का प्रारम्भ लगभग 3.8 अरब वर्ष पहले हुआ। करोड़ों वर्षों के बदलाव के बाद आज हम वर्तमान स्थिति तक पहुँचे है। हमारा पर्यावरण व परिस्थितिकी एक ऐसी जटिल पारितंत्र का निर्माण करते है जो हमारे जीवन को संभव बनाते थे। औद्योगिकरण व अन्य मानव गतिविधियों के फलस्वरूप प्रकृति का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है ''संयुक्त राष्ट्र के अनुसार वैश्विक गर्माहट (ग्लोबल वार्मिंग) का स्तर विगत तीस वर्षों में 50 प्रतिशत तक बढ़ चुका है। जीवाश्म ईधनों के जलाए जाने से कार्बन उत्सर्जन के बढ़ने की गति 62 प्रतिशत के आस–पास पहुँच चुकी है। यह स्थिति न सिर्फ मनुष्य बल्कि जैव विविधता के लिये भी एक खतरा है।''[3]

हमारे गाँव आज भी प्रकृति व पर्यावरण के प्रहरी बने हुए हैं। सरदार सरोवर बांध की ऊँचाई बढ़ाने का विरोध ग्रामीणों ने किया। चिपको आन्दोलन को सफल बनाने का श्रेय आम ग्रामीणजनों को जाता है। प्रायः शहरी आवश्यकताओं की पूर्ति को सुनिश्चित करने के लिये बिजली संयत्र, विशाल बांध, उद्योगों के लिये जमीन, हाइवे के लिये जमीन, शहरों के विस्तार के लिये जमीन की आपूर्ति कृषि व वनों से जाती है। इससे पर्यावरण की अपार क्षति होती है। हमें धारणीय विकास के मॉडल पर कार्य करना होगा। शहरों की कीमत पर गॉवों के पर्यावरण व परिस्थितिकी का विकाश नहीं कर सकते है। क्योंकि यह स्थिति अन्ततः हमारे ऊपर भारी पड़ेगी। हम गॉवों की संस्कृति, पर्यावरण एवं परिस्थितिकी की रक्षा कर पर्याटन का अक्षय स्रोत पैदा क सकते हैं जिससे न सिर्फ गॉवों का भाग्य बदलेगा बल्कि विकसित भारत की संकल्पना भी साकार की जा सकेगी।

निष्कर्ष–सैर करना, मनुष्य का सबसे स्वाभाविक गुण होता है। साथ ही साथ मनुष्य के लिये एवं सुन्दर अहसास भी। भारत में पर्यटन के लिये बहुत सी सुन्दर जगहें हैं। किन्तु प्रायः देखा जाता है कि हमारे पास ऐसे स्थानों की जानकारी नहीं होती है। गर्मियों के मौसम में शिमला, मसूरी, नैनीताल, कश्मीर आदि चंद नाम ही हमारे मस्तिष्क में आते है। यहाँ पर प्रायः पर्यटकों की भीड रहती है। लेकिन बहुत स्थान ऐसे भी है जो बहुत सुन्दर है लेकिन वहाँ पर्यटको के अनुकूल सुविधाओं का विकास नही हुआ है। भारत का ग्रामीण क्षेत्र पर्यटन के लिये स्वर्ग से कम नही है लेकिन बुनियादी सुविधाओं के अभाव में गाँव दुर्दशा के शिकार है। गॉवों में पर्यावरण व परिस्थितिकी के अनुकूल सुविधाएँ विकसित कर देने से गॉव पर्यटन का एक सस्ता व आकर्षक केन्द्र बन जायेंगे। बुन्देलखण्ड व पूर्वांचल के ग्रामीण क्षेत्र बहुत ही सुन्दर व प्रकृति के सानिध्य में है। आवश्यकता इस बात की है कि इन्हें पर्यटन के अनुकूल बनाकर देश विदेश में इनका प्रचार है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, गिरिराज, कुरूक्षेत्र दिसम्बर 2023 अंक पृष्ठ संख्या 61
2. मधूसूदन, गजेन्द्र सिंह व डॉ0 सिंह, शंभूनाथ कुरूक्षेत्र दिसम्बर 2023 पृष्ठ संख्या 40
3. डा0 सिंह, रहीस योजना, अक्टूबर 2022, पृष्ठ सं0 15
4. योजना, आत्म निर्भर भारत, दिसम्बर 2021
5. योजना, फिटनेक, अप्रैल 2022 तंक
6. हबीब, इरफान (2023) ''मनुष्य और पर्यावरण'' राजकमल प्रकाशन
7. बहुगुणा, सुन्दरलाल (2013) ''पर्यावरण एवं विकास'' सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी
8. राजगोपालन, आर (2020) ''पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी'' ओम ब्रिज पब्लिसिंग प्राइवेट लि0